वेणू गोपाल की दो कवितायें

सुनो हिटलर

1. हम गाऐंगे / अंधेरों में भी /
जंगलों में भी / बस्तियों में भी /
पहाड़ों पे भी / मैदानों में भी /
आंखों से / होठों से /
हाथों से / पांवों से /
समूचे जिस्म से /
ओ हिटलर!
हमारे घाव / हमारी झुर्रियां /
हमारी बिवाइयां / हमारे बेवक्त पके बाल /
हमारी मार खाई पीठ / घुटता गला /
सभी तो
आकाश गुनगुना रहे हैं।
तुम कब तक दांत पीसते रहोगे ?
सुनो हिटलर-!
हम गा रहे हैं।
(रचनाकाल : 29.06.1980)

2. काले भेड़िए के खिलाफ़

देखो
कि जंगल आज भी उतना ही खूबसूरत है।
अपने आशावान हरेपन के साथ
बरसात में झूमता हुआ। उस
काले भेड़िए के बावजूद
जो
शिकार की टोह में
झाड़ियों से निकल कर खुले में आ गया है।
खरगोशों और चिड़ियों और पौधों की दूधिया
वत्सल निगाहों से
जंगल को देख भर लेना
दरअसल
उस काले भेड़िए के खिलाफ़ खड़े हो जाना है
जो सिर्फ़
अपने भेड़िए होने की वजह से
जंगल की खूबसूरती का दावेदार है
भेड़िए
हमेशा हमें उस कहानी तक पहुंचाते हैं
जिसे
वसंत से पहले
कभी न कभी तो शुरू होना ही होता है और
यह भी बहुत मुमकिन है
कि ऐसी और भी कई कहानियां
कथावाचक के कंठ में
अभी भी
सुरक्षित हों। जानना इतना भर जरूरी है
कि हर कहानी का एक अंत होता है। और
यह जानते ही
भविष्य तुम्हारी ओर मुस्करा कर देखेगा।
तब इतना भर करना
कि पास खड़े आदमी को इशारा कर देना
ताकि वह भी
भेड़िए के डर से कांपना छोड़
जंगल की सनातन खूबसूरती को
देखने लग जाए।
(रचनाकाल : 14.08.1975)

मुझे आप खुशी से देशद्रोही कह सकते हैं

(आपके रंडी और गद्दार कहने को मैं बुरा नहीं मानती)

मैं अपने घर के बच्चों को घर में रखकर खुद ही पढ़ाऊंगी। मैं उन्हें इतिहास और विज्ञान पड़ाऊंगी। मैं उन्हें समाजशास्त्र और संविधान पढ़ाऊंगी)

मुझे आप खुशी से देशद्रोही कह सकते हैं। यही मेरी प्रवृत्ति है। यही मेरा चरित्र है। आपकी देशभक्ति से इतनी घृणा हो गई है कि देशद्रोही का आरोप मुझे सुकून देता है। आपकी धर्मांधता और शून्यता से पैदा हुई खीझ से देशभक्ति शब्द की सकारात्मकता मेरी नजर में खत्म हो चुकी है। देशभक्ति की आपकी परिभाषा इतनी खोखली लग रही है कि मुझे देशद्रोह लुभाने लगा है। आप मुझे देशद्रोही ही मानिएगा।

देशभक्तो, अपनी करनी पर थोड़ा गौर करिए। आपको लग रहा है कि आप ही इस देश के रक्षक और योद्धा हैं, लेकिन हमारी नगरों से भी खुद को एक बार घूरिए और कुछ हो ना हो इससे, लेकिन इतना जरूर होगा कि देशभक्त होने की आपकी गलतफहमी कुछ बिलांग कम होगी। देश का हितैषी होने की खुशफहमी से गुब्बार बना आपका सीना कुछ इंच जरूर सिकुड़ेगा।

देश को धर्म और दलित-सवर्ण के पाटों में बांटकर जहर उगलना नई देशभक्ति है। गरीबों, वंचितों और हाशिये पर जी रहे लोगों की बात करनेवालों को पत्थर मारना नई देशभक्ति है। सरकार की नीतियों और योजनाओं से असंतुष्टि जताने वालों को धमकाना नई देशभक्ति है। संविधान और संवैधानिक मूल्यों की बात करने वालों की जूतमपैजार करना नई देशभक्ति है। लोकतांत्रिक पद्धत्ति से सरकार बनाने वालों को, लोकतंत्र की याद दिलाने वालों को मां-बहन की गाली देना (महिलाओं को रंडी कहना) नई देशभक्ति है। मुद्दों पर आधारित विरोध प्रकट करने में किसी राजनैतिक पार्टी या धर्म का ध्यान ना रख, बिना पक्षपात किए सवाल करने वालों को पाकिस्तान का दलाल कहना नई देशभक्ति है। सार्वजानिक और राजनैतिक जीवन से धर्म को दूर रखने की अपील करने वालों को देशद्रोही का तमगा देना, नई देशभक्ति है। वैचारिक मतभेद का जवाब शारीरिक और शाब्दिक हिंसा से देना नई देशभक्ति है। ऐसा देशभक्त बनना आपको मुबारक हो, मैं और मेरी जमात के लोग नहीं हैं ऐसे देशभक्त। इस देश से इतना प्यार है हमें कि हम कभी ऐसे देशभक्त नहीं हो सकेंगे।

लोग कह रहे हैं कि राष्ट्रवाद को पाठ्यक्रम में अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। सुनिए, जो मन करे वह पढा लीजिए। सत्ता में रहकर आपको यह हक भी मिल जाएगा और समर्थक भी मिल जाएंगे, जो ताली बजाकर नाचेंगे, लेकिन आप मुझे यह शिक्षा अपने बच्चों को दिलाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। जिस दिन दीनानाथ बत्रा मॉडल अनिवार्य हो गया, उस दिन मैं अपने घर के बच्चों को घर में रखकर खुद ही पढ़ाऊंगी। मैं उन्हें इतिहास और विज्ञान पढ़ाऊंगी। मैं उन्हें समाजशास्त्र और संविधान पढ़ाऊंगी। डिग्री ना हो तो ना सही। वे बिना डिग्री वाले शिक्षित समझदार नागरिक बनेंगे। डिग्रीवाले बेवकूफों से बेहतर है यह विकल्प। उनको कोई सरकारी या ऑफिस वाली नौकरी नहीं मिलेगी, लेकिन पेशे के लिए लोहार, बडई या किसान बनना और पेट पालना बुरा नहीं। ना मैं धर्मांध हूं और ना मेरे घर के बच्चे धर्मांध बनेंगे।

आपकी तरह हमने कभी धर्म और जाति देखकर वोट नहीं दिया। आपकी तरह हमारी विचारधारा स्वार्थजनित पक्षपात से नहीं बनती-बदलती। पैदायशी धर्म तो मेरा भी हिंदू है, फिर अपने हितों के खिलाफ जाने में मेरा क्या स्वार्थ? मैं अपवाद नहीं। कई ऐसे लोग हैं जो कट्टर हिंदू और ब्राह्मणवादी परिवार से होकर भी इस व्यवस्था का विरोध करते हैं। पता है क्यों, क्योंकि इस व्यवस्था का हिस्सा होने के कारण हम इसकी बुराइयों और अन्याय को अच्छी तरह समझते हैं। आपकी तरह अंधे राष्ट्रवादी हम नहीं हैं, लेकिन हमें इस मिट्टी और यहां के लोगों से इतना प्यार है कि आप सोच भी नहीं सकते। इसकी विविधता और इसकी लोकतांत्रिक परंपरा के हम दीवाने हैं। हमें किसानों, मजदूरों, शोषितों की और यहां के हर इंसान की परवाह होती है। जाति, धर्म, वर्ग, संप्रदाय, आस्तिक-नास्तिक इन सब भिन्नताओं से परे हमें इंसानों की तकलीफ रुलाती है। आपका दर्द फर्जी है। वह संवेदना ही क्या जो पक्षपात करके जागे। वह तर्क ही क्या जो अपनों का घेरा बनाकर जागे।

देश को खतरा हमसे नहीं, आपसे है। इस्लामिक स्टेट और ट्रम्प के खतरे के बीच आप देश को धर्म और समुदाय के आधार पर बांटकर खुश हो रहे हैं। लोगों को भरोसे में लेने की जगह डरा रहे हैं। युवाओं के वैचारिक विरोध को गालियां देकर हमले कर रहे हैं और उनको डरा रहे हैं। नक्सलियों से अब तक नहीं जीत सके और नए लड़ाके घर में ही पैदा कर रहे हैं। चीन, रूस, अमेरिका, फ्रांस की क्रांति को स्कूल-कॉलेज में पढ़ाते हैं, लेकिन उनपर विमर्श करने वाले छात्रों को देशद्रोही कहकर हाशिये पर धकेल रहे हैं। उन्हें भूमिगत होने का विकल्प दे रहे हैं।

हमें भी, तंत्र से आपत्ति है। हमें गाली नहीं देनी, लेकिन कोई हमें गाली दे, यह भी हमें अच्छा नहीं लगता। किसी देश से लड़ाई ना हो रही हो, तो उसके साथ हम दोस्ताना ताल्लुकात चाहते हैं। किसानों के लिए सब्सिडी चाहते हैं। आर्थिक स्थिति के हिसाब से आयकर का बंटवारा चाहते हैं। असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए काम के सीमित घंटे और बीमा-मेडिकल जैसी सुविधाएं चाहते हैं। महिलाओं के लिए बराबरी चाहते हैं। बुनियादी सुविधाओं की तरक्की चाहते हैं। पुलिस विभाग में सुधार चाहते हैं। ये सबकुछ आपके जैसे देशभक्त कभी नहीं चाहते। आप सिर्फ देश में भगवा झंडा लहराना चाहते हैं और हर प्रकार की विभिन्नता, हर प्रकार के विरोध को कुचल देना चाहते हैं।

ना आपकी भाषा संयत है और ना आपके इरादे सही हैं। भारत का नाम लेकर आप चीखते हैं, लेकिन भारत की आत्मा को ही नहीं समझते। इस बहुसंस्कृति वाले देश का लोकतंत्र आपको चिढ़ाता है। आपका विरोध मां-बहन की गाली पर खत्म होता है। आपका विरोध सबको देशद्रोही और पाकिस्तान का दलाल कहता है। रंडी और नपुंसक आपकी शब्दावली का अहम हिस्सा हैं। आपकी पार्टी और आपकी विचारधारा सही, बाकी सब अलग। मुझे खुशी है कि आपके जैसी नहीं हूं मैं और इसीलिए देशभक्त भी नहीं हूं। आपके लिए मैं देशद्रोही सही, लेकिन अपनी इंसानियत से बहुत खुश हूं मैं। नीचे कॉमेंट बॉक्स में जाकर आप जो गालियां देंगे, उसके लिए आपका अग्रिम शुक्रिया। आपके रंडी और गद्दार कहने को मैं बुरा नहीं मानती। आप 'सौ-सौ फूलों को खिलने दो और सौ-सौ विचारों को पनपने दो' में भरोसा नहीं रखते इसलिए आपके आसपास की हवा में अलग-अलग फूलों की महक नहीं है। आपके विचार सैकड़ों साल पुरानी सोच का पोखरा बन गए हैं जिसका पानी लगातार सड़ रहा है और इसी कारण वहां नफरत के कीड़े बिलबिला रहे हैं। ऐसे पोखर से तो दुर्गंध ही निकलेगी। वही फैला रहे हैं आप हर जगह, यहां भी फैलाइए।

- स्वाति मिश्रा

सरकारी मिलीभगत से चलती गुंडइ के विरुद्ध सेक्टर 15 मार्केट में हड़ताल

फ़रीदाबाद (म.मो.) 'हूडा' विभाग को मंथली देकर अवैध कब्ज़े करने तथा पुलिस संरक्षण में पलने वाले चौधरी ढाबा मालिकान-अजयपाल व रामधन ने पूरी गुंडा-गर्दी दिखाते हुए मार्केट के प्रधान मनोहर, सचिव देवेन्द्र तथा एक अन्य दुकानदार को सरेआम बुरी तरह से पीटा। इस मौके पर मार्केट स्थित पुलिस चौकी वाले मूक दर्शक बने तमाशा देखते रहे। देखें भी क्यों न, माल भी तो चौधरी ढाबे का खाते हैं पुलिसवाले।

पूरे शहर की तरह इस मार्केट में भी सरकारी अफ़सरों की मिलीभगत के चलते न केवल मार्केट के बरामदों बल्कि उनके बाहर भी रेहड़ी, फ़ड़ी आदि के नाजायज कब्ज़े हैं। इनके चलते मार्केट में आने जाने वाले ग्राहकों को भारी दिक्कत होती है। कुछ दुकानदारों ने तो खुद अपने सामान से बरामदे घेर रखे हैं तथा उसके बाहर 200 से 500 रुपये प्रति दिन के हिसाब से रेहड़ियां आदि खड़ी करा रखी हैं। ये गरीब रेहड़ी वाले दुकानदारों के अलावा 'हूडा' तथा स्थानीय पुलिस को भी नकद हफ़्ता, देने के अलावा अन्य फ़टीक भी भुगतते हैं।

ग्राहकों की परेशानी को समझते हुए इस मार्केट के तमाम दुकानदारों ने स्वत: अतिक्रमण हटाने का निर्णय लिया। 'हूडा' प्रशासक से मिले, लेकिन कोई विशेष प्रत्योत्तर न मिलने पर कमेटी ने स्वत: अतिक्रमण हटाने शुरू किये। फ़ैसला क्योंकि सामूहिक था इसलिये पूरी मार्केट में कोई दिक्कत नहीं हुई। लेकिन जब ये लोग पुलिस पार्टी को साथ लेकर चौधरी ढाबे पर पहुंचे तो वहां उक्त दोनों भाइयों व उनके नौकरों ने कमेटी के पदाधिकारियों पर हमला कर दिया। पुलिस पार्टी की मौजूदगी में सभी को बुरी तरह से पीटा और पुलिस खड़ी तमाशा देखती रही।

मार्केट वाले शिकायत लेकर चौकी पहुंचे तो अधिकारी रपट तक लिखने को तैयार नहीं था। उधर ढाबा मालिकान के हौंसले इतने बुलंद कि पुलिस चौकी में मार्केट वालों को मां-बहन की गालियां देकर कहते रहे कि मेरा ...उखाड़ ले, अपना रिवालवर दिखाते हुए कहा कि अब कै आये तो जान से मार देंगे। पुलिस चौकी के बाद थाना सेंट्रल गये तो वहां भी कोई सुनवाई नहीं हुई। थक-हार कर सारी मार्केट बंद करके ये लोग सी पी (पुलिस कमिश्नर) के पास पहुंचे तो कहीं जाकर एक औपचारिक सा मुकदमा दर्ज हुआ जिसमें हाथों हाथ जमानत भी हो गयी। जमानत पर आते ही दोनों भाई फ़िर से गुर्राये-पाड़ लिया म्हारा...। हम तो यूं ही कब्ज़े रखेंगे। गुर्राये भी क्यों न जब पुलिस की नियमित रूप से पूरी सेवा पानी करेंगे तो फ़िर किसी से डरने की क्या जरूरत। जाहिर है कि पुलिस द्वारा इस तरह की फ़र्जी कार्यवाही करने से गुंडागर्दी पर रोब नहीं लगाई जा सकती है। यदि पुलिस मौके पर ही गुंडई करने वालों को ठीक से 'सम्भाल' लेती और अवैध कब्ज़े हटाकर समान कब्ज़े में ले लेती तो गुंडों के हौंसले इतने बुलंद न हो पाते। कानून व्यवस्था बनाये रखने के हित में सी पी साहब को भी चौकी व थाने के जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध उचित कार्यवाही करके कड़ा संदेश देना चाहिये था।

विदित है कि मार्केट के बरामदों का सबसे बड़ा हिस्सा तो इस ढाबे ने घेर ही रखा है, साथ में खुली जगह व 'हूडा' द्वारा निर्मित सार्वजनिक शैचालय पर भी अपना ताला जड़ रखा है। जाहिर है यह सब दादागिरी ये लोग मुफ़्त में नहीं कर रहे हैं। जानकार बताते हैं कि इसके एवज में 'हूडा' का जे.ई.व एस.डी.ओ.नियमित रूप से बीस-बीस हज़ार की मंथली इनसे वसूलते हैं तथा खाना-पीना फ्री।

यह संभव नहीं कि एस्टेट अफ़सर व प्रशासक इन सब बातों से अनभिज्ञ हों। ये अफ़सरान भी यही इसी सेक्टर में रहते हैं और मार्केट में भी आते जाते रहते हैं। लगभग हर नया आने वाला प्रशासक एक बार जरूर इस मार्केट का दौरा करके दुकानदारों को अतिक्रमण के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की धमकी देता है। लेकिन उसके बाद भी सब कुछ ज्यों का त्यों चलता रहता है। यह धमकी शायद इस लिये दी जाती है कि अतिक्रमण करने वाले बाकायदा मंथली देने के अलावा इसे समय-समय पर बढाते भी रहें। यदि ये अफ़सर खुद चोर न हों तो किसी की क्या मजाल जो एक इन्च भी अतिक्रमण कर लें। जितना बड़ा अफ़सर उतना बड़ा चोर।